राष्ट्रीय–संगोष्ठी

दिनांक-18 एवं 19 मार्च, 2024

विषय - भारतीय विदेश नीति : हिंद-प्रशांत क्षेत्र
(Indian Foreign Policy : Indo-Pacific Region)

पंजीकरण-प्रपत्र

नाम व पदनाम.....

विभाग एवं संस्था का नाम.....

.....

पत्राचार का पता.....

.....

.....

मो. नं. .....ई-मेल.....

.....

शोध-पत्र का शीर्षक .....

.....

.....

ट्रांजेक्शन आई.डी. (If UPI Payment) .....

दिनांक .....हस्ताक्षर .....

आवासीय सुविधा .....हाँ/नहीं.....

(आवासीय सुविधा हेतु पहले सूचित करें।)

ऑनलाइन रजिस्ट्रेशन लिंक -

https://docs.google.com/forms/

RTGS/NEFT/UPI से भी ऑनलाइन भुगतान किया जा सकता है।

Payment UPI Link
9792987700m@pnb

Bank Details
Digvijay Nath P.G. College
Bank : PNB
A/c No.: 0184020100003856
IFSC : PUNB0475600

पंजीकरण शुल्क

शिक्षक : रु. 700/- शोधार्थी : रु. 400/- विद्यार्थी : रु. 200/-

सम्पर्क सूत्र :-
श्री इन्द्रेश कुमार : 9415161590
E-mail : dnpgpolscience@gmail.com

मुख्य संरक्षक

परम पूज्य योगी आदित्यनाथ जी महाराज
माननीय मुख्यमंत्री, उत्तर प्रदेश शासन
प्रबन्धक, दिग्विजयनाथ स्नातकोत्तर महाविद्यालय, गोरखपुर, उ.प्र.

संरक्षक

प्रो. उदय प्रताप सिंह
अध्यक्ष, महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद, गोरखपुर, उ.प्र.
पूर्व कुलपति, वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यालय,जौनपुर, उ.प्र.

प्रो. पूनम टण्डन
कुलपति, दी.द.उ. गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर, उ.प्र.

प्रो. रूसीराम महानन्दा
अध्यक्ष, राजनीति विज्ञान विभाग, दी.द.उ. गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर, उ.प्र.

अध्यक्ष

प्रो. ओम प्रकाश सिंह
प्राचार्य, दिग्विजयनाथ स्नातकोत्तर महाविद्यालय, गोरखपुर, उ.प्र.

संयोजक/सचिव

श्री इन्द्रेश कुमार
अध्यक्ष, राजनीति विज्ञान विभाग, दिग्विजयनाथ स्नातकोत्तर महाविद्यालय, गोरखपुर, उ.प्र.

सह-संयोजक

डॉ. शैलेश कुमार सिंह	सहायक आचार्य, राजनीति विज्ञान विभाग, दिग्विजयनाथ स्नातकोत्तर महाविद्यालय, गोरखपुर, उ.प्र.
डॉ. प्रियंका सिंह	सहायक आचार्य, राजनीति विज्ञान विभाग, दिग्विजयनाथ स्नातकोत्तर महाविद्यालय, गोरखपुर, उ.प्र.
डॉ. अखिल कुमार श्रीवास्तव	सहायक आचार्य, राजनीति विज्ञान विभाग, दिग्विजयनाथ स्नातकोत्तर महाविद्यालय, गोरखपुर, उ.प्र.
श्री श्रीवर्धन त्रिपाठी	सहायक आचार्य, राजनीति विज्ञान विभाग, दिग्विजयनाथ स्नातकोत्तर महाविद्यालय, गोरखपुर, उ.प्र.

परामर्शदात्री-समिति

प्रो. शशि प्रभा सिंह	समन्वयक, नैक स्टीयरिंग कमेटी, दिग्विजयनाथ स्नातकोत्तर महाविद्यालय, गोरखपुर, उ.प्र.
प्रो. धीरेन्द्र सिंह	मुख्य नियन्ता, दिग्विजयनाथ स्नातकोत्तर महाविद्यालय, गोरखपुर, उ.प्र.
प्रो. परीक्षित सिंह	समन्वयक, आई.क्यू.ए.सी., दिग्विजयनाथ स्नातकोत्तर महाविद्यालय, गोरखपुर, उ.प्र.
प्रो. राजेश कुमार सिंह	आचार्य, राजनीति विज्ञान विभाग, दी.द.उ. गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर, उ.प्र.
प्रो. रजनीकान्त पाण्डेय	आचार्य, राजनीति विज्ञान विभाग, दी.द.उ. गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर, उ.प्र. पूर्व कुलपति, सिद्धार्थ विश्वविद्यालय,कपिलवस्तु, सिद्धार्थनगर, उ.प्र.
प्रो. विनीता पाठक	आचार्य, राजनीति विज्ञान विभाग, दी.द.उ. गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर, उ.प्र.
प्रो. गोपाल प्रसाद	आचार्य, राजनीति विज्ञान विभाग, दी.द.उ. गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर, उ.प्र.
डॉ. महेन्द्र कुमार सिंह	सहायक आचार्य, राजनीति विज्ञान विभाग, दी.द.उ. गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर, उ.प्र.
डॉ. अमित कुमार उपाध्याय	सहायक आचार्य, राजनीति विज्ञान विभाग, दी.द.उ. गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर, उ.प्र

राष्ट्रीय – संगोष्ठी

प्रायोजक
भारतीय वैश्विक परिषद,(ICWA)
नई दिल्ली

आयोजक
राजनीति विज्ञान विभाग
दिग्विजयनाथ स्नातकोत्तर महाविद्यालय,गोरखपुर, उ.प्र.
(नैक प्रत्यायित 'B^{++}' श्रेणी)
(सम्बद्ध : दी.द.उ.गोरखपुर विश्वविद्यालय,गोरखपुर, उ.प्र.)

दिनांक-18 एवं 19 मार्च, 2024

विषय - भारतीय विदेश नीति : हिंद-प्रशांत क्षेत्र
(Indian Foreign Policy : Indo-Pacific Region)

आमंत्रण-पत्र

सेवा में,

.....

.....

.....

निवेदक :
प्रो. (डॉ.) ओम प्रकाश सिंह
प्राचार्य
दिग्विजयनाथ स्नातकोत्तर महाविद्यालय,
सिविल लाइन्स, गोरखपुर, उ.प्र.,273001
Website https://dnpgcollege.edu.in/

संगोष्ठी का विषय :

भारतीय विदेश नीति : हिंद-प्रशांत क्षेत्र
(Indian Foreign Policy : Indo-Pacific Region)

हिंद - प्रशांत क्षेत्र प्राचीन काल से ही भारत के लिए महत्वपूर्ण रहा है। दुनिया की सबसे अधिक आबादी इस क्षेत्र में निवास करती है। यह क्षेत्र आर्थिक और सामरिक दृष्टि से भी महत्वपूर्ण है। वर्तमान में विश्व व्यापार की 75 प्रतिशत वस्तुओं के आयात-निर्यात में तथा विश्व GDP में 60 प्रतिशत का योगदान इसी क्षेत्र का है। इस क्षेत्र में क्षेत्रीय व्यापार एवं निवेश के अवसर पैदा करने हेतु सभी आवश्यक घटक मौजूद हैं। इस प्रकार देखें तो वैश्विक सुरक्षा और नई विश्व व्यवस्था की कुंजी हिंद-प्रशांत क्षेत्र के हाथ में ही है। वर्तमान समय में वैश्विक राजनीति की दिशा भी तय करने में हिंद-प्रशांत क्षेत्र की भूमिका महत्वपूर्ण रही है और भारत को इस क्षेत्र में एक अहम साझेदार के तौर पर देखा जा रहा है । यह वह क्षेत्र है, जहां अमेरिका और चीन के बीच रणनीतिक प्रतिस्पर्धा अपने चरम पर है। यूरोपीय संघ व आसियान और अमेरिका, आस्ट्रेलिया, जापान, दक्षिण कोरिया, यूनाइटेड किंगडम जैसे ज्यादातर देशों ने हिंद-प्रशांत क्षेत्र को अपनी विदेश नीति के लिए प्रमुख माना है और इसमें भारतीय विदेश नीति की केन्द्रीय भूमिका है। भारत की हिंद-प्रशांत नीति का उद्देश्य इस क्षेत्र में समान विचारधारा वाले देशों के साथ साझेदारी को मज़बूत करना और इस क्षेत्र के लिए महत्वपूर्ण समझे जाने वाले मुद्दों को केंद्र में रखते हुए नए गठजोड़ बनाना रहा है ताकि नई रणनीतिक और सुरक्षा संबंधी चुनौतियों का समाधान ढूंढा जा सके। क्वाड जैसे क्षेत्रीय मंचों पर अमेरिका, जापान और आस्ट्रेलिया जैसे देशों के साथ भारत की बढ़ती भागीदारी से स्पष्ट है कि इन देशों के साथ भारत के द्विपक्षीय संबंध बहुत तेज़ी से आगे बढ़ रहे हैं। भारत एक मुक्त, खुले और समावेशी नीति के साथ हिंद-प्रशांत क्षेत्र में शांति के लिए लगातार प्रयास कर रहा है लेकिन भारत की भूमिका को लेकर चिंताएँ व्यक्त की जा रही हैं। फिर भी भारत अपने राष्ट्रहित को ध्यान में रखते हुए एक संतुलित और सकारात्मक विदेश नीति के साथ इस क्षेत्र में गतिशील है।

हिंद-प्रशांत क्षेत्र से जुड़े विभिन्न मुद्दों में भारत का महत्त्व, वैश्विक शक्तियों की भारत से इस क्षेत्र में अपेक्षा, मौजूदा समय में भारत की हिंद-प्रशांत नीति की दशा एवं दिशा और भारत की विदेश एवं सुरक्षा नीतियों के संदर्भ में कौन से नीतिगत निर्णय लिए जाएं जो हिंद-प्रशांत क्षेत्र में एक विश्वसनीय और उभरती हुई शक्ति के रूप में भारत को स्थापित करने में योगदान देगी, ऐसे ही प्रासंगिक एवं महत्त्वपूर्ण मुद्दों के परिप्रेक्ष्य में सकारात्मक विचार/चर्चा करने के लिए इस संगोष्ठी का आयोजन होना है।

शोध-पत्र :

शोध-पत्र के लिए विषय से संबंधित कतिपय बिंदुओं को रखा गया है लेकिन इनके अतिरिक्त आप विद्वतजन स्वतंत्र रूप से संगोष्ठी के विषयानुकूल अपनी विशेषज्ञता के क्षेत्र से कोई शीर्षक चुन सकते हैं।

1. वैश्विक राजनीति में हिंद-प्रशांत क्षेत्र का महत्त्व ।
   Importance of Indo-Pacific region in global politics.
2. हिन्द-प्रशांत क्षेत्र के परिप्रेक्ष्य में भारतीय विदेश नीति।
   Indian foreign policy in the context of the Indo-Pacific region.
3. वर्तमान समय में हिंद-प्रशांत क्षेत्र में वैश्विक महाशक्तियों का ध्रुवीकरण।
   Polarization of Global Superpowers in the Indo-Pacific region.
4. हिन्द-प्रशांत क्षेत्र में चीन का बढ़ता वर्चस्व और क्वाड ।
   China's increasing dominance in the Indo-Pacific region and QUAD.
5. हिंद-प्रशांत क्षेत्र में आसियान का दृष्टिकोण ।
   ASEAN perspective on the Indo-Pacific region.
6. हिंद-प्रशांत क्षेत्र की राजनीति के परिप्रेक्ष्य में भारत-चीन संबंध।
   Indo-China relations in the context of global politics of the Indo-Pacific region.
7. सामरिक एवं आर्थिक दृष्टि से हिंद-प्रशांत क्षेत्र का महत्त्व ।
   Significance of Indo-Pacific region from strategic and economic point of view.
8. हिंद-प्रशांत क्षेत्र की उभरती गतिशीलता में भारत की स्थिति ।
   India's position in the emerging dynamics of the Indo-Pacific region.
9. हिंद-प्रशांत क्षेत्र में ''प्रतिस्पर्धा के साथ सहयोग'' की भारतीय विदेश नीति ।
   Indian foreign policy of "Cooperation with Competition" in the Indo-Pacific region.
10. हिन्द-प्रशांत क्षेत्र में भारत के शांति प्रयास ।
    Peace efforts of India in the Indo-Pacific region.
11. हिन्द-प्रशांत क्षेत्र में उभरती चुनौतियां एवं समाधान।
    Emerging challenges and solutions in the Indo-Pacific region.
12. हिंद-प्रशांत क्षेत्र में स्वतंत्र, खुली एवं समावेशी हिन्द-प्रशांत नीति की उपयोगिता।
    Usefulness of Free, Open and Inclusive Indo-Pacific Policy in the Indo-Pacific region.
13. भू-राजनीति के बदलते आयाम और हिंद-प्रशांत क्षेत्र।
    Changing dimensions of geo-politics and the Indo-Pacific region.
14. हिंद-प्रशांत क्षेत्र की समस्याओं का वैश्विक व्यापार पर प्रभाव।
    Impact of problems in the Indo-Pacific region on global trade.

संगोष्ठी में प्रतिभाग करने वाले विद्वतजन, शोधार्थियों एवं विद्यार्थियों से अपेक्षित है कि उपर्युक्त विषय/उप विषय में से किसी शीर्षक पर अपना शोध-पत्र हिंदी अथवा अंग्रेजी भाषा में अधिकतम 2500से 3000 शब्दों में प्रेषित करें। इसे हिंदी के Krutidev 10 font size 14 अथवा अंग्रेजी के Times New Roman Font Size 12 (M.S.Word) में भेजें। शोध-पत्र के आरम्भ में अधिकतम 250 शब्दों का शोध- संक्षेप (Abstract) और अंत में उपसंहार (Conclusion) अवश्य लिखें। शोध-पत्र दिनांक **25 फरवरी, 2024** तक E-mail: dnpgpolscience@gmail.com पर प्रेषित करें। चयनित शोध-पत्रों को ISBN युक्त पुस्तक में प्रकाशित किया जाएगा। इच्छुक प्रतिभागी निर्धारित धनराशि देकर पुस्तक प्राप्त कर सकते हैं।

महाविद्यालय - परिचय :

गोरक्षपीठ द्वारा संचालित महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद, गोरखपुर राष्ट्रीय पुनर्निर्माण और शिक्षा के प्रसार की एक अग्रणी संस्था है। पूर्वी उत्तर प्रदेश में गोरखपुर को केन्द्र बनाकर प्राथमिक से उच्च शिक्षा तक लगभग चार दर्जन से अधिक शिक्षण-प्रशिक्षण संस्थानों एवं सेवा केन्द्रों का संचालन करने वाली इस संस्था की स्थापना सन् 1932 ई. में गोरक्षपीठाधीश्वर महन्त दिग्विजयनाथ जी महाराज ने की थी। अपने गुरुदेव युगपुरुष महन्त दिग्विजयनाथ जी महाराज के बहुआयामी सपनों को साकार करने में निरन्तर प्रयासरत गोरक्षपीठाधीश्वर महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज ने इसे पुष्पित-पल्लवित किया। वर्तमान में उनके सुयोग्य उत्तराधिकारी गोरक्षपीठाधीश्वर, जो उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री हैं, परम पूज्य श्रद्धेय योगी आदित्यनाथ जी महाराज के मार्गदर्शन एवं संरक्षण में यह संस्था अपनी अविस्मरणीय भूमिका निभा रही हैं।

महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद, गोरखपुर द्वारा संचालित अनेक प्रकल्पों में उच्च शिक्षा की अग्रणी संस्था दिग्विजयनाथ स्नातकोत्तर महाविद्यालय, गोरखपुर की स्थापना 25 अगस्त, 1969 ई. को हुई। यह संस्था दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर से संबद्ध है और NAAC द्वारा 2.84 CGPA के साथ B^{++} ग्रेड प्राप्त है। यह संस्था उत्तर प्रदेश शासन द्वारा भी A ग्रेड प्राप्त है। महाविद्यालय में स्नातक और स्नातकोत्तर स्तर पर उत्कृष्ट शिक्षण के लिए 4 संकाय (कला, विज्ञान, वाणिज्य व शिक्षा) और 21 विभाग स्थापित हैं। यहां राजनीति विज्ञान, प्राचीन इतिहास, पुरातत्व एवं संस्कृति, भूगोल, हिंदी और आधुनिक भारतीय भाषा, शिक्षाशास्त्र, समाजशास्त्र, वाणिज्य, गणित और रसायन विज्ञान में स्नातकोत्तर शिक्षण के साथ-साथ शोधार्थियों का भी मार्गदर्शन किया जाता है। यह संस्थान उत्तर प्रदेश राजर्षि टंडन मुक्त विश्वविद्यालय के शिक्षा केंद्र के रूप में भी कार्य करता है। शिक्षण के अतिरिक्त यह संस्था अपने स्थापना काल से ही राष्ट्रीय चेतना की संवाहक रही है और इसी प्रतिबद्धता के साथ प्रत्येक वर्ष 5000 से अधिक विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास का कार्य कर रही है ताकि वे स्वावलम्बी बन सकें तथा देश की समृद्धि एवं उन्नति में अपना अमूल्य योगदान दे सकें।

महाविद्यालय महायोगी गुरु गोरखनाथ की तपोभूमि गोरखपुर नगर के हृदय स्थल सिविल लाइन्स में स्थित है। यह वायु, रेल एवं सड़क मार्ग से देश के सभी प्रमुख शहरों से जुड़ा है एवं महायोगी गुरु गोरक्षनाथ हवाई अड्डे से लगभग 8 किमी., गोरखपुर जंक्शन रेलवे स्टेशन से 1.5 किमी., गोरखपुर रेलवे बस स्टेशन से 1.5 किमी. तथा गोरखपुर कचहरी बस स्टेशन से मात्र 500 मी. की दूरी पर स्थित है।

आयोजन-समिति

प्रो. अरूण कुमार तिवारी, अध्यक्ष, बी.एड.विभाग
प्रो. नित्यानन्द श्रीवास्तव, अध्यक्ष, हिन्दी विभाग
प्रो. शुभ्रा श्रीवास्तव, संयोजक, वूमेन इम्पावरमेंट सेल
प्रो. अर्चना सिंह, अध्यक्ष, समाजशास्त्र विभाग
डॉ. विवेक कुमार शाही, अध्यक्ष, मनोविज्ञान विभाग
डॉ. अनिल भास्कर, अध्यक्ष, भूगोल विभाग
श्री अवधेश कुमार शुक्ल, अध्यक्ष, शारीरिक शिक्षा विभाग
श्री धर्मचन्द विश्वकर्मा, अध्यक्ष, वनस्पति विज्ञान विभाग
श्रीमती निधि राय, अध्यक्ष, शिक्षाशास्त्र विभाग
डॉ. प्रतिमा सिंह, अध्यक्ष, रसायन विज्ञान विभाग
डॉ. अनिता कुमारी, अध्यक्ष, प्राणि विज्ञान विभाग
श्री पीयूष कुमार सिंह, अध्यक्ष, अंग्रेजी विभाग
डॉ. शुभांशु शेखर सिंह, संयोजक, इनोवेशन सेल
डॉ. राम प्रसाद यादव, अध्यक्ष, रक्षा एवं स्त्रातजिक अध्ययन विभाग
डॉ. संजीव कुमार सिंह, अध्यक्ष, वाणिज्य विभाग
डॉ. पवन कुमार पाण्डेय, अध्यक्ष, कम्प्यूटर विज्ञान विभाग
डॉ. नितीश शुक्ल, अध्यक्ष, भौतिक विज्ञान विभाग
डॉ. सूरज कुमार शुक्ल, अध्यक्ष, गणित विभाग
डॉ. हरिशंकर गुप्ता, अध्यक्ष, बी.सी.ए. विभाग
डॉ. दीपक सिंह, अध्यक्ष, अर्थशास्त्र विभाग